

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 31-05-2016 ● अंक- 541 ● तारीख - 01 जून 2016, ज्येष्ठ कृष्ण - 11 ● बुधवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रुपया ● पृष्ठ-01

श्री सत्यसाई बाबा (अनमोल वचन)



साई संस्था में भागीदारी
देवात्मस्वरूप जनो! जो भी सत्य साई संस्था के अन्तर्गत आते हैं उन्हें यह भली-भांति समझ लेना चाहिए कि उनके चित्त में लेशमात्र भी अहंकार नहीं होना चाहिए। उन्हें जिला अध्यक्ष तथा समिति अध्यक्ष सरीखी उपाधियों से उन्मत्त नहीं होना चाहिए।
—श्री सत्य साई बाबा

बात पते की....

1. सोचिए, कोई बेहतर राह अवश्य होगी।
2. जो भी करना है, अभी करें।
3. हमेशा बेहतर की माँग करें।
4. भविष्य वर्तमान ही है।
5. अपनी सोच का दायरा बढ़ाएँ।
6. अपने दिमाग का 6 से 8 प्रतिशत हिस्सा खाली रखें।
7. सकारात्मक दृष्टिकोण से लाभ होता है।
8. स्वास्थ्य ही प्रसन्नता है।
9. सोचना बहुत मेहनत का काम है।

निःशुल्क बिजली कनेक्शन ले सकेंगे बीपीएल परिवार

राजस्थान के विद्युतीकृत ग्रामीण इलाकों में बिजली कनेक्शन की आस लगाए बैठे हजारों परिवारों के लिए अच्छी खबर है। बिजली कम्पनियों ऐसे गांवों में जरूरतमंदों को बिजली कनेक्शन देने के लिए 19 जून से विशेष शिविर लगाएगी। शिविर हर माह के पहले व तीसरे रविवार को लगाया जाएगा, जहां उपभोक्ताओं को मौके पर ही कनेक्शन जारी होंगे। बीपीएल परिवारों को उनके ग्रामीण क्षेत्र में निःशुल्क कनेक्शन भी दिए जाएंगे।

बिजली कम्पनियों के चेयरमैन संजय मल्होत्रा ने बताया कि शिविरों के माध्यम से चालू वित्तीय वर्ष 2016-17 में आठ लाख घरेलू कनेक्शन देने का लक्ष्य है। दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना में स्वीकृत 27 जिला क्षेत्रों के प्रत्येक पंचायत क्षेत्र में शिविर लगेंगे।



कुछ समय अपने परिवार के लिए भी निकालें

एक बुजुर्ग ने अमेरिका में अपने बेटे को फोन किया और खबर दी, 'मैं सुबह-सुबह तुम्हारा मूड खराब करना नहीं चाहता, पर मुझे यह बताना जरूरी लगा कि मैं और तुम्हारी मां 35 साल के साथ के बाद एक-दूसरे से अलग हो रहे हैं। अब दुख और सहन नहीं होता।'



पिता ने कहा, 'अब हमें एक-दूसरे को देखना भी दूभर हो रहा है। हम दोनों एक दूसरे से उकता गए हैं। यहां तक कि इस बारे में तुम्हें बताने में भी उकताहट हो रही है। इसलिए अब तुम्हीं अपनी बहन के पास हांगकांग फोन करके बता दो।' बेटे ने बहन के पास फोन मिलाया। वह सुनकर फोन पर ही जोर से बोलने लगी। 'क्या बकवास कर रहे हो तुम, क्या वे तलाक ले रहे हैं? मैं देखती हूँ इस बारे में।' उसने तुरंत पिता को फोन मिलाया और उनसे जोर देकर कहने लगी, 'आप

तलाक नहीं लेंगे। जब तक मैं नहीं आ जाती, तब तक आप कोई भी ऐसा कदम नहीं उठाएंगे। मैं दोबारा से छोटे को फोन कर रही हूँ और कल ही हम दोनों आ रहे हैं। जब तक हम नहीं आ जाएं, आपमें से कोई ऐसा नहीं करेगा। सुन रहे हैं ना आप?'

बूढ़ा आदमी मुड़ा और अपनी पत्नी से कहा, 'सब सही हो गया है, वे दोनों हमारी शादी की सालगिरह पर आ रहे हैं और अपना किराया भी खुद ही देंगे। जान लें- कोई भी व्यक्ति 365 दिन व्यस्त नहीं होता। कुछ दिन आराम और घर को देने में कुछ हानि नहीं है। कुछ समय अपने परिवार और दोस्तों को खुशियां देने में बिताएं। आपकी नौकरी और व्यस्तताएं समय के साथ बदल जाएंगी, पर परिवार और दोस्तों की जगह कोई नहीं ले सकता। उन्हें समय देने के लिए तैयार रहें।'

दुग्ध में है - शक्ति (विश्व दुग्ध दिवस)

विश्व दुग्ध दिवस 2016 को पूरे विश्व के लोगों द्वारा आज बुधवार, 1 जून को मनाया जायेगा। विश्व दुग्ध दिवस का इतिहास बहुत सारे देशों के सहभागिता से पूरे विश्व में 2001 में पहली बार विश्व दुग्ध दिवस मनाया गया था। इस उत्सव में वर्ष दर वर्ष भाग लेने वाले देशों की संख्या बढ़ती ही चली जा रही है। तब से, पूरे विश्व भर में दूध और दुग्ध उद्योग से संबंधित क्रिया-कलापों को प्रचार-प्रसार में हर वर्ष ध्यान केंद्रित करने के लिये इसे मनाया जाता है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्सव संबंधित क्रिया-कलापों को आयोजित करने के द्वारा इस उत्सव का राष्ट्रीयकरण किया जाता है। पूरे जीवन भर सभी के लिये दूध और इसके उत्पादों के महत्व के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाने के लिये इसे मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र खाद्य और कृषि संगठन के द्वारा 1 जून को विश्व स्तर पर हर वर्ष मनाने के लिये विश्व दुग्ध दिवस की पहली बार स्थापना की गयी थी। इसे 1 जून को मनाने के लिये चुना गया था क्योंकि इस

समय के दौरान बहुत सारे देशों के द्वारा विश्व दुग्ध दिवस पहले से ही मनाया जा रहा था। 1 जून को वार्षिक आधार पर पूरे विश्व भर के लोगों के द्वारा विश्व दुग्ध दिवस मनाया जाता है। प्राकृतिक दुग्ध के सभी पहलुओं के बारे में आम जनता की जागरूकता बढ़ाने के लिये इसे मनाया जाता है जैसे इसकी स्वाभाविक उत्पत्ति, दूध का पोषण संबंधी महत्व और विभिन्न दूध उत्पाद सहित पूरे विश्वभर में इसका आर्थिक महत्व। विभिन्न उपभोक्ताओं और दूध उद्योग के कर्मचारियों के भाग लेने के द्वारा कई देशों (मलेशिया, कोलंबिया, रोमानिया, जर्मनी, संयुक्त अरब अमीरात, अमेरिका आदि) में इसे मनाने की शुरुआत की गयी। विश्व दुग्ध दिवस के पूरे उत्सव के दौरान दूध को एक वैश्विक भोजन के रूप में केंद्रित किया जाता है। ऑनलाइन अपने वेबसाइट पर अंतरराष्ट्रीय डेयरी संघ के द्वारा ढेर सारे विज्ञापन संबंधी क्रिया-कलापों (एक स्वस्थ और नियंत्रित भोजन के रूप में दूध के महत्व को बताना) की शुरुआत की गयी है। पूरे दिन प्रचार

संबंधी गतिविधियों के द्वारा आम लोगों के लिये दूध के महत्व के संदेश को फैलाने के लिये एक-साथ काम करने के लिये उत्सव में स्वास्थ्य संस्थाओं से विभिन्न सदस्य भाग लेते हैं। दूध की सच्चाई को उनको समझाने के लिये विश्व दुग्ध दिवस उत्सव बड़ी जनसंख्या पर असर डालता है। दूध शरीर के द्वारा जरूरी सभी पोषक तत्वों का एक बहुत अच्छा स्रोत है जिसमें कैल्सियम, मैग्नीशियम, जिंक, फॉस्फोरस, ऑयोडीन, आइरन, पोटेशियम, फोलेट्स, विटामिन ए, विटामिन डी, राइबोफ्लेविन, विटामिन बी12, प्रोटीन, स्वस्थ फ़ैट आदि मौजूद होता है। ये बहुत ही ऊर्जायुक्त आहार होता है जो शरीर को तुरंत ऊर्जा उपलब्ध कराता है क्योंकि इसमें उच्च गुणवत्ता के प्रोटीन सहित आवश्यक और गैर-आवश्यक अमीनो एसिड और फ़ैटी एसिड मौजूद होता है।

चूंकि दूध एक महत्वपूर्ण आहार होता है इसलिये सभी को इसे रोज लेना चाहिये, दूध के महत्व के बारे में आम लोगों के बीच विश्व दूध दिवस उत्सव एक असरदार क्रांति ले आया है। नियंत्रित आहार में दूध को जोड़ने के बारे में नये संदेश को प्राप्त करने के लिये पूरे विश्व भर में हरेक के लिये हर वर्ष विश्व दुग्ध दिवस उत्सव एक संपूर्ण मौका ले आता है। कई सारे प्रचारात्मक गतिविधियों के द्वारा लोगों के बीच संदेश को भेजने के लिये एक साथ काम करने द्वारा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संघ के सदस्यों के द्वारा इसे मनाया जाता है।



द देने का आनन्द

प्रत्येक काम मेरे नाम से करो। प्रत्येक ऐसे व्यक्ति को जो तुम्हारे पथ के निकट से जाता है, अपनी मुस्कान की मधुरता दो। अपनी प्रसन्नता के प्याले का अमृत, अपनी दया व आनन्द को भरपूर बाँटो। अपने प्रेम की गरिमा बाँटो। अपना हाथ सहायता करने के लिये इस प्रकार बढ़ाओ, जैसे मैं तुम्हारी और बढ़ाता हूँ। जब तुम अपनी जीवन रूपी पेंखुड़ियों को गिरते हुये देखो तो उस समय तुम्हें विश्वस्त होना चाहिये कि तुमने आजीवन उन हाथों को भलाई के लिये ही प्रयोग किया था। जब तक अपनी जीवन रूपी पेंखुड़ियों को नीचे पथ पर गिरता हुआ अनुभव करो तो उदासीन नहीं अपितु प्रसन्न होओ। वह आनन्द जिसका तुम आवंटन करते हो तुम्हें हृदय से किसी की सेवार्थ बाँटने के लिये ही दिया गया था। कलाकार, स्ट्रेज अभिनेता, गायक आदि जिन्होंने छोटी बड़ी सभाओं को घंटों आनन्दित किया उन्हें यह ज्ञा होना चाहिये कि दूसरों के मनों का बोझ हल्का करने के लिये ही वह क्षण उन्हें दिये गये थे। क्षमतायें मानव द्वारा निर्माण की हुई नहीं होती हैं। हमें सबसे अधिक इस बात पर बार-बार बल देना है कि हमें सेवा को अपनी सांसारिक गतिविधियों का पुण्य फल समझना चाहिये। अधिक उपलब्धियों की अभिलाषा मत करो। यदि तुम्हें अधिक मिल जाता है तो सब पर कृपा करो और जीवन मंच पर उन अतिरिक्त क्षणों का आनंद लो। मेरी दृष्टि में सभी कलाकार हैं और सभी निपुण अभिनेता हैं। सेवा द्वारा तुम्हें यहाँ तो असीम प्रसन्नता प्राप्त होगी ही, मैं भी तुम्हें वहाँ सदा सर्वदा के लिए नित्य आनंद प्रदान करूंगा। इससे अधिक तुम और क्या माँग सकते हो? केवल देने वाले और सेवा करने वाले को ही भगवत्पथ पर आशीष मिल सकती है। चार्ल्स, इस शिक्षा को ग्रहण करो और इसका आवंटन कर दो, सभी जन अनमोल हैं। अन्यों को दे देने से व उनकी सेवा द्वारा अर्जित आनन्द और कोई भी वस्तु-समुद्र से मोती, पर्वत से सोना अथवा खान से निकला हीरा, नहीं दे सकता। भगवान बाबा के चरण कमलों में बैठ कर उनके दिव्य प्रकार द्वारा जगत में प्रवाहित किये गये ज्ञानोपदेश ग्रहण कर मैंने शिक्षायें लिपिबद्ध की हैं। इस ज्ञान प्रवाह को सभी प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि उनके शब्द संसार के समस्त जनसमुदाय के लिये हैं। उनकी मधुर वाणी का श्रवण करो, सरिता के उद्गम की कोई सीमा नहीं होती। — श्री सत्य साई बाबा

मानव मन के बोल

होनहार बिरवान के होत चिकने पात



गतांक से आगे.....
जिस पिता-माता के ऐसे महान् बेटे-बेटी हों, जो रामचिरत मानस खूब पढ़ते हैं, वे धन्य हो गये। अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता में बच्चों ने कहा-पापा, हमने तो 100-100 दोहे, चौपाइयाँ याद कर ली हैं। किसी भी अक्षर पर आयेगी तो हम बोल देंगे, जैसे 'व' पर आयेगी तो -
वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।
मंगलानाम् च कर्तारो वन्दे वाणीविनायकौ।(49)
मंगल करता है वन्दे वाणी विनायको, मैं ऐसी सरस्वती माता को और विनायक भगवान गणेश जी को प्रणाम करता हूँ। 'प' अक्षर पर आयेगी तो -

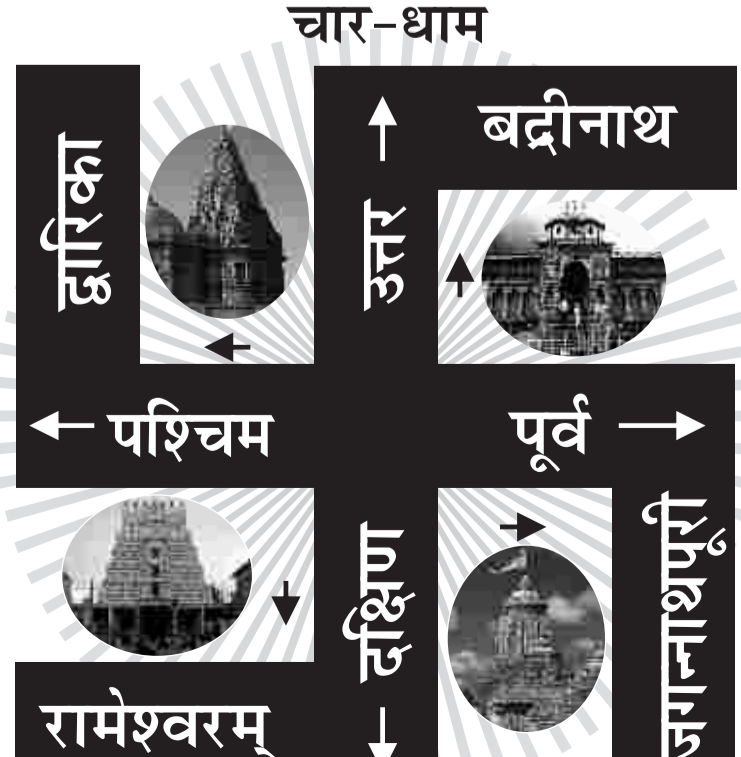
परहित सरिस धर्म नहीं भाई।
परपीड़ा सम नहीं अधमाई।(50)
बैठे हैं, छः-छः घण्टे गप्पे लगा रहे हैं। कहते हैं साहब, टाईम पास कर रहे हैं। टाईम पास नहीं कर रहे हो, टाईम आपको पास कर रहा है। पास का मतलब आगे बढ़ाओ। पास का मतलब- आगे बढ़ाओ नहीं, आपको इग्नोर कर रहा है। आपकी तरफ देखता भी नहीं है टाईम। जो ताश व जुआ खेलते हैं, उनको शर्म आनी चाहिये। उनको याद करना चाहिये, जुआ खेलने से युधिष्ठिर को 12 साल का वनवास हुआ, 1 साल का अज्ञात वास हुआ। द्रौपदी को दासी बन करके रानी के केश गूँथने पड़े, रानी के कपड़े धोने पड़े। भीमसेन को रोटियाँ बनानी पड़ी। अर्जुन ने बृहन्नला बन करके राजा की पुत्री उत्तरा उसको संगीत सिखाया। नकुल जी को घुड़साल की रखवाली करनी पड़ी। सहदेव जी तंतिपाल नाम से गोरक्षक का काम करने लगे। कितना कष्ट पाया? समय खराब किया जुआ खेला, दुष्टता की।
क्रमशः अगले अंक में ...

प्रसन्नता से ही सुख की प्राप्ति - श्री चन्द्रप्रभ

एक महा कंजूस व्यक्ति का बेटा बीमार हो गया। पिता इतना कंजूस कि उसने अपने बेटे पर खर्चा नहीं किया। बेटा और अधिक बीमार होता गया, मरणासन्न हो गया। लोगों ने कह दिया कि अब यह मरने वाला है, इसे पलंग से नीचे उतार दो। कंजूस ने सोचा कि मर गया तो घर के बर्तन, बिस्तर सब धोने पड़ेंगे तो घर के बाहर ले आया, चौकी पर लिटा दिया। वह तड़प रहा था। इतने में ही उसने देखा कि श्री भगवान आहारचर्या के लिए उधर जा रहे हैं। उनके शांत तेजस्वी मुखमंडल को देखकर वह प्रभावित हुआ, आँखें मिलीं, मन में प्रसन्नता छा गई। वह सोचने लगा, 'मैं मरने वाला हूँ, लेकिन प्रभु तेरी कितनी कृपा हो गई कि मरने से पहले तुमने मुझे एक महान सत्गुरु के दर्शन करवा दिए।' चित्त में प्रसन्नता छा गई। उसके मन की भाव-दशाएं अत्यन्त निर्मल हो गईं और इसी



भाव-दशा के साथ उसने अपनी काया छोड़ दी। कहते हैं, काया छोड़कर वह ऋद्धि-सिद्धि सम्पन्न देवता बन गया। देवता बनकर वह श्री भगवान की सभा में उपस्थित हुआ और वह कृपण भी, चूंकि उसका बेटा मर गया था अतः वह अपने मन की अवस्थाओं को ठीक करने के लिए भगवान के पास पहुंचा। वहां उस ऋद्धि-सिद्धि सम्पन्न व्यक्ति को देखकर उसने पूछा कि यह कौन है। पता चला कि उसका ही पुत्र था। 'मेरा बेटा, अरे उसने तो कभी सौ मुद्राओं का दान नहीं किया, वह मरकर इतना महान देवता कैसे बन गया।' भगवान ने कहा-मरने से पहले इसके चित्त की जो प्रसन्न अवस्था थी, सद्गुरु को देखकर उसके मन जो उत्कृष्ट भावदशा बनी थी वही इसके इतने ऋद्धि-सिद्धि सम्पन्न देवता बनने में सहायक हुई।



सम्पादकीय

एक नगर था। नगर में एक व्यक्ति फेरी लगाकर सामान बेचा करता और अपने बच्चों का पेट भरता। उसका नाम 'सुजान' था। सुजान हमेशा कहता था कि वह अपनी मेहनत, बुद्धि और भाग्य की खाता है, किसी की कृपा की नहीं। बात राजा तक पहुँची। राजा ने उसकी परीक्षा लेने की ठानी। राजा ने सुजान को द्वारपाल बना दिया। दिन भर पहरेदारी करने के बाद शाम होते-होते सुजान को अपने बच्चों के भोजन की फिर सताने लगी। उसने पास में पड़ी लकड़ी की एक टहनी को छीला और उसे तलवार की जगह म्यान में रख लिया। तलवार बेचकर उसने अपने बच्चों के खाने का प्रबंध किया। राजा को यह बात पता चल गयी।

दूसरे दिन राजा ने उस दरवाजे का निरीक्षण किया जहाँ सुजान पहरेदारी के लिए तैनात था। राजा ने अकारण ही एक सेवक को जोर से डाँट लगायी और सुजान से कहा, 'इस सेवक का अपराध अक्षम्य है। अपनी तलवार निकालो और इसका सिर धड़ से अलग कर दो।' सुजान मन ही मन घबराया लेकिन उसने चतुराई से काम लिया और आसमान की ओर मुँह करते हुए बोला, 'अगर यह सेवक बेकसूर है तो मेरी तलवार लकड़ी की हो जाये।' उसने म्यान में से तुरन्त तलवार खींच ली। लकड़ी की तलवार देखकर सभी दरबारी इसे ईश्वरीय करामात समझकर अचम्भित रह गये। राजा को सब पता था। सुजान की चतुराई से प्रसन्न होकर कहा, 'वाकई हम अपनी मेहनत, बुद्धि और भाग्य की ही खाते हैं, किसी की कृपा की नहीं।'

क्षमा की पराकाष्ठा

संत एकनाथ प्रतिदिन गंगा में स्नान करने जाते थे। उन्हें एक झरोखे के नीचे से गुजरना पड़ता था। एक दिन एकनाथ गंगा स्नान करके लौट रहे थे। झरोखे के नीचे से गुजरे तो वहाँ बैठे रहने वाले एक व्यक्ति ने उन पर थूक दिया। बिना कुछ बोले एकनाथ पुनः गंगा स्नान करने चले गए। जब लौटे तो झरोखे के पास फिर उसी व्यक्ति ने उन थूक दिया। एकनाथ फिर गंगा की ओर चल पड़े और स्नान करके खुद को स्वच्छ किया। इक्कीस बार ऐसा हुआ पर एकनाथ को उत्तेजना नहीं आई। वे शांत बने रहे। अंत में वह व्यक्ति झरोखे से नीचे उतरा और संत एकनाथ के चरणों पर गिर पड़ा, बोला -महाराज ! मैंने धृष्टता करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। पर आपने तो शांति और क्षमा की पराकाष्ठा ही दिखा दी। एकनाथ बोले, मैंने कोई विशेष काम नहीं किया है। तुम्हारे जैसा सहायक और उपकारी कभी कभी ही मिलता है। तुम्हारी कृपा से आज मुझे 21 बार गंगा स्नान का मौका मिला। मेरे जीवन में यह पहला अवसर है।

सत्संग भजन व दीनबंधु वार्ता

उदयपुर । नारायण सेवा संस्थान के बड़ी परिसर में स्थित डिडवानिया हॉल में गत दिनों भजन-सत्संग एवं दीनबंधु वार्ता का आयोजन हुआ। जिसका सीधा-प्रसारण आस्था चैनल पर देशभर में हुआ। संस्थान संस्थापक श्री कैलाश मानव ने कहा कि अटक से कटक, कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत एक है और हम सभी मिलकर देश को प्रगति के सोपान पर बढ़ा सकते हैं। दिव्यांग बंधुओं को भी मुख्य धारा में शामिल कर उनकी सहभागिता भी सुनिश्चित करना हम सब का कर्तव्य है। अध्यक्ष श्री प्रशान्त अग्रवाल ने कहा कि पीड़ितों और जरूरतमंदों की सेवा में लगाया जाने वाला जीवन ही सर्वश्रेष्ठ है। प्रेम ही सृष्टि का आधार है, जो ज्ञान आचरण में नहीं वह व्यर्थ है। कार्यक्रम का संचालन ओमपाल सीलन ने किया।



व्यवहार है जीवन का राजमार्ग

(मानव धर्म शृंखला का चतुर्थ (4) पुष्प)

गतांक से आगे....

भक्तराज प्रह्लाद के पिताजी भगवान से प्रेम नहीं करते थे, विद्रोह करते थे, अभिमानी थे, दानव थे, कुमार्गगामी थे, इसीलिए भक्तराज प्रह्लाद ने बार-बार अपने पिताश्री को कहा कि आप प्रभु का स्मरण करो, प्रभु का चिंतन करो। बाबूज़ आप तो बड़े भाग्यवान हो, आपके पिताश्री बहुत अच्छे, आपके दादाजी बहुत महान। विचार करो, आपके बुजुर्गों के जिन गुणों ने आपश्री को बहुत अधिक प्रभावित किया हो, यदि वो बुजुर्ग इस दुनिया में हैं तो उनकी सेवा कर लो, उनको प्रसन्न रख लो और यदि इस दुनिया में नहीं हैं, भगवान के चरणों में पधार गये हैं तो मानसिक रूप से प्रणाम करके बार-बार मन में विचार करो कि हे दादाजी, आपके गुण हमारे अन्दर आवें। हे नानाजी, मैंने देखा, मैंने पाया, मैंने अनुभव किया, मैंने अहसास किया, मैंने समझा। एक डॉक्टर जब लोभ में आ गये, तो उनके पिताजी ने थप्पड़ लगाई तब डॉक्टर साहब ने कहा- मेरे पिताजी की थप्पड़ ने मुझे हैवान से इंसान बना दिया। हैवान क्या होता है ? हैवान के कोई दस मुख नहीं होते। कहते हैं रावण के तो दस मुख थे, होते होंगे, जरूर हुए होंगे। आज का इंसान जो लोभी है, जो लालची है, जो जुआ खेलने वाला महापापी है, जुआ खेलकर आपके घर की संपत्ति को गंदी नाली में मत डालिये। ये ताश खेलने का शौक भी अच्छा नहीं है। आपके कम्प्यूटर पर गंदे चित्र मत देखिये, ये आपके रास्ते को खराब कर देंगे, ये आपके रास्ते को मलिन कर देंगे, ये कुमति वाले हैं, ये पाप वाले हैं। जब कहते हैं-

बुद्धम् शरणम् गच्छामि।

संघम् शरणम् गच्छामि।

धर्मम् शरणम् गच्छामि।(69)

इसका अर्थ होता है बोधि को प्राप्त हो। हमारी बोधि यह हो, एक-एक क्षण सफल हो जावे।

सेवा रत्न सम्भाल रहे

धन्य स्वयं को मान रहे

सेवा पथ पर चले है जो लोग

कि उनका हम को ध्यान रहे

सेवा रत्न सम्भाल रहे(70)

मेरे प्यारे बंधुओं, आप बहुत धर्म परायण हो। तभी तो मानव धर्म की पुस्तक पढ़ रहे हो - महाराज। सोचा कि क्या शुभनाम लिखें ? नाम ग्रंथ का कुछ भी हो, आपको ये अपनाना है। आपके जीवन में जो आदर्श महापुरुष मिलें, उनके गुणों को ग्रहण करना है। मैं जब मन में स्मरण करता हूँ, मेरे पूज्य ताऊजी, गोलोकवासी श्रीमान देवीलाल जी साहब का। ऊँ नमः शिवाय, ऊँ नमः शिवाय। भीण्डेश्वर महादेव जी के परम भक्त, श्रीराम लला के परम भक्त, नृसिंह भगवान के परम भक्त। मैं जब स्मरण करता हूँ उनकी भक्ति को, उनके अतिथि प्रेम को। भूखे को भोजन देते थे, गरीब को कपड़ा देते थे, बीमार को दवा देते थे और प्यासे को पानी पिलाते थे। जब मैं स्मरण करता हूँ अपने पूज्य पिताश्री मदन लाल जी अग्रवाल साहब का, अकाल के दिनों में और बारह महीने मक्की की एक बोरी अपनी दुकान पर रखते थे। हमारे पास घर का मकान भी नहीं था, किराये के मकान में रहते थे या गिरवी की हवेली में रहते थे लेकिन पिताश्री अपने हाथ सेवा के लिए खुले रखते थे-

देनहार कोउ ओर है, देत रहत दिन रैन।
लोग भ्रम मो पर करे, ताते नीचे नैन।(71)
सब समझिये कि ईश्वर कर रहा है, परमात्मा कर रहा है। हे ! दीनानाथ, हे ! भगवान, कृपा करो।
"भूल दिखाकर उसे मिटाकर, अपना प्रेम प्रदान करो।"

क्रमशः

मुख्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
अध्यक प्रबन्धक-मोहन लाल गाडनी
संपादक-लक्ष्मीलाल गाडनी
संपादन अत्योगी-धनश्याम मिश्र नटौड

विचारों की शक्ति (लेख)

भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, गरीब मछुआरे के बेटे थे। बचपन में अखबार बेचा करते थे। आर्थिक कठनाईयों के बावजूद वे पढाई करते रहे। सकारात्मक विचारों के कारण ही उन्होंने भारत की प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनेक सफलताएँ हासिल कीं। अपने आशावादी विचारों से वे आज भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में वंदनीय हैं। उन्हें मिसाइल मैन के नाम से जाना जाता है। हमारे देश में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में ऐसे अनेक लोग हैं जिन्होंने विपरीत परिस्थिति में भी अपनी सकारात्मक वैचारिक शक्ति से इतिहास रचा है।

20 वीं सदी के महानतम राजनेताओं में से एक ब्रिटेन के प्रधानमंत्री चर्चिल बचपन में हकलाते थे, जिसके कारण उनके सहपाठी उन्हें बहुत चिढ़ाया करते थे। अपनी हकलाहट के बावजूद चर्चिल ने बचपन में ही सकारात्मक विचारों को अपनाया और मन में प्रण किया कि, मैं एक दिन अच्छा वक्ता बनूंगा। उनके आशावादी विचारों ने विपरीत परिस्थिति में भी उन्हें कामयाबी की ओर अग्रसर किया। द्वितीय विश्व युद्ध के समय ब्रिटेन को एक साहसी अनुभवी और सैन्य पृष्ठभूमि वाले प्रधानमंत्री की जरूरत थी। विरुद्ध चर्चिल को उस समय इस पद के लिये योग्य माना गया। राजनीति के अलावा उनका साहित्य में भी योगदान रहा। इतिहास, राजनीति और सैन्य अभियानों पर लिखी उनकी किताबों की वजह से उन्हें 1953 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। ये सब उपलब्धियां उनके

सकारात्मक विचारों का ही परिणाम है। कई बार हम सबने क्रिकेटर्स को कहते सुना होगा कि एक दो चौका पड़ जाने से विपक्ष का मनोबल टूट गया जिससे वे गलत बॉलिंग करने लगे और मैच हार गये। वहीं कुछ खिलाड़ियों के साथ ये भी देखने को मिलता है कि वे पुरे सकारात्मक विचारों से खेलते हैं परिस्थिति भले ही विपरीत हो तब भी, जिसका परिणाम ये होता है कि वे हारी बाजी भी जीत जाते हैं। सकारात्मक विचार की शक्ति से तो बिस्तर पर पड़े रोगी में भी ऊर्जा का संचार होता है और वे पुनः अपना जीवन सामान्य तौर से शुरू कर पाता है। हमें अपने मस्तिष्क को महान विचारों से भर लेना चाहिए तभी हम महान कार्य संपादित कर सकते हैं। जैसे कि हम सोचे, मैं ऊर्जा से भरपूर हूँ, आज का दिन अच्छा है, मैं ये कार्य कर सकता हूँ, क्योंकि विचार शैली विषम या प्रतिकूल परिस्थिति में भी मनोबल को ऊँचा रखती है। सकारात्मक व्यक्ति सदैव दूसरे में भी सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है। अक्सर देखा जाता है कि, हममें से कई लोग चाहे वो विद्यार्थी हों या नौकरीपेशा या अन्य क्षेत्र से हों काम या पढाई की अधिकता को देखकर कहने लगते हैं कि ये हमसे नहीं होगा या मैं ये नहीं कर सकता। यही नकारात्मक विचार उन्हें आगे बढ़ने से रोकते हैं। यदि हम ना की जगह ये कहें कि हम कोशिश करते हैं हम ये कर सकते हैं तो परिस्थिति सकारात्मक संदेश का वातावरण निर्मित करती है। जिस तरह हम जब रास्ते में चलते हैं तो पत्थर या कार्टों पर पैर नहीं रखते उससे बचकर निकल जाते हैं उसी प्रकार हमें अपने नकारात्मक विचारों से भी बचना चाहिए क्योंकि जिस प्रकार एक पेड़ से माचिस की लाख से भी ज्यादा तीलियाँ बनती हैं किन्तु लाख पेड़ को जलाने के लिए सिर्फ एक तीली ही काफी होती है। उसी प्रकार एक नकारात्मक विचार



हमारे हजारों सपनों को जला सकता है। हमारे विचार तो, उस रंगीन चश्में की तरह हैं जिसे पहन कर हर चीज उसी रंग में दिखाई देती है। यदि हम सकारात्मक विचारों का चश्मा पहनेंगे तो सब कुछ संभव होता नजर आयेगा। भारत की आजादी, विज्ञान की नित नई खोज सकारात्मक विचारों का ही परिणाम है। आज हमारा देश भारत विकासशील से बढकर विकसित राष्ट्र की श्रेणी में जा रहा है। ये सब सकारात्मक विचारों से ही संभव हो रहा है। अतः हम अपने सपनों और लक्ष्यों को सकारात्मक विचारों से सिचेंगे तो सफलता की फसल अवश्य लहलहायेगी। बस, हमें सकारात्मक विचारों को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाना होगा। स्वामी विवेकानंद जी कहते हैं कि, मन में अच्छे विचार लायें। उसी विचार को अपने जीवन का लक्ष्य बनायें। हमेशा उसी के बारे में सोचे, सपने देखें। यहाँ तक की उसके लिए हर क्षण जिएं। आप पायेंगे कि सफलता आपके कदम चूम रही है। यदि हम ये सोचें कि, हम कुछ भी कर पाने में सक्षम हैं, चाहे वो हमारी सोच हो या जीवन या हमारे सपने सब सच हो सकते हैं। हम इस अनंत ब्रह्माण्ड की तरह अनंत संभावनाओं से परिपूर्ण हैं। तो ऐसे सकारात्मक विचारों को जीवन में अपनाने से हमारे जीवन में सार्थक और सफल परिवर्तन संभव हो सकेगा।

जीवन नाम है सुख दुःख का

किस्मत और हालात बदलते देर नहीं लगती। मुश्किल तब आती है, जब समय अच्छा न चल रहा हो। बुरे हालात हमें कमजोर और निराशावादी बना देते हैं। अगर मुश्किल हालात में आप कुछ बातों की गाँठ बांध लें, उन्हें अपने जिंदगी में उतार लें तो आपकी जिंदगी पूरी तरह बदल सकती है। मानसिक रूप से ये निर्णय लें कि चाहे कुछ भी हो जाए, आपका व्यवहार सुखद और प्रेमपूर्ण बना रहेगा। आपके अंदर की सहानुभूति हमेशा जाग्रत रहेगी। कड़वाहट, कठोर शब्द, प्रतिकार और बदले की भावना को त्याग दें। अपने अंदर क्षमा की भावना लाएं।



क्षमादान का अपना वक्त होता है। हर व्यक्ति के लिए यह वक्त अलग-अलग हो सकता है, यह उस व्यक्ति के स्वभाव और व्यक्तित्व पर निर्भर करता है। इसलिए अपने आपको उबरने का पूरा वक्त दें। इस दौरान मुश्किल भावनाओं जैसे गुस्सा, हीन भावना, आत्म-ग्लानि, उदासी आदि से गुजरने के लिए तैयार रहें। इन्हें बदलाव का हिस्सा मानकर बीतने दें। मेडिटेशन या प्रार्थना: अगर आप मेडिटेशन करते हैं तो आपके अंदर जिन स्थानों में निराशा और उदासी घर कर गई है, वहाँ उम्मीद और आशा पहुंच जाएगी।

सादर आमंत्रण

दिव्यांग, अनाथ, रांगी, विधवा, वृद्ध, वंचितजनों एवं विपन्दिता की सेवा में सतत संघारत

नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर

सहायक अध्यक्ष

श्री बेकूण्ड धाम, बद्रिनाथ में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा

आयोजक

बृजभाव सेवा समिति एवं राधे-राधे सत्संग मण्डल, पटियाला, पंजाब

दिनांक: 6 जून 2016

स्थान: पंजाब चिंच श्रद्धा, बद्रिनाथ, (उत्तराखण्ड)

कथा व्यास: **पुज्य बृजनंदन जी महाराज**

व्यस्य पीठ पर विराजमान होकर अपने मुखारविन्द में आजित्यो इसमयी मधुरकाषी द्वारा संगीतमय कथा का श्रवणपान करावेंगे। आयुश्री से अनुरोध है कि सम्परासार ईष्ट मित्रों सहित पधारक श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण लाभ उठावें।

स्वार्गत समर्क सूत्र: 09230371115

संस्थान समर्क सूत्र: 0294-6622222, 9649499999

निःशुल्कजनों की सेवा-सहयोग के प्रति समर्पित

कैलाश 'मानव' त्रैनेजिंग ट्रेनी एवं संस्थापक नारायण सेवा संस्थान	कमला देवी कोषाध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान	प्रशान्त अग्रवाल अध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान	वन्दना मिश्रा निदेशिका नारायण सेवा संस्थान
--	---	---	---

जगदीश आर्य
ट्रेनी एवं निदेशक
नारायण सेवा संस्थान

देवेन्द्र चौबीसा
ट्रेनी एवं निदेशक
नारायण सेवा संस्थान

भक्ति एवं सेवा के महायज्ञ में एक आहुति आपकी भी कृत्या सपरिवार अवश्य पधारें।